Result Mitra Daily Magazine

हवेली संगीत

➢ हवेली संगीत :

- इसे 'मंदिर संगीत' के नाम से भी जाना जाता है, जो प्राचीन मंदिर में निहित एक अनूठी संगीत परंपरा है।
- मध्यकाल में संगीत के इस स्वरूप में गिरावट आई लेकिन भक्ति आंदोलन के उदय, विशेषकर वैष्णव संप्रदाय के पुष्टिमार्गीय संगीत परंपरा ने इसका पुनरुत्थान किया।
- यह वास्तव में केवल 500 वर्ष पुरानी संगीत परंपरा है, लेकिन यह 5000 वर्षों पुरानी भक्ति संगीत की परंपरा को संरक्षित कर रहा है।

➢ वल्लभाचार्य का योगदान :

- 1556 में वल्लभाचार्य को गिरिराज पर्वत पर भागवत का एक दिव्य रूप मिला, जिसे उन्होंने 'श्रीनाथ' नाम दिया।
- उन्होंने भगवान श्रीनाथ के लिए एक भव्य मंदिर बनाने का निर्णय लिया लेकिन मुगलों द्वारा इसके विनाश की चिंता से उन्होंने श्रीनाथ को राजस्थान में नाथद्वारा में स्थापित किया।
- वल्लभाचार्य ने अपने चार शिष्यों (कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास एवं परमानंद दास) में से कुंभनदास को श्रीनाथ का पहला गायक (कीर्तनकार) नियुक्त किया।

➢ अष्टा–सखा :

- इसकी परंपरा वल्लभाचार्य के पुत्र श्री विट्ठलनाथ (श्री गुसाईं) के समय में विकसित हुई।

- गुसाईं ने चार अन्य शिष्यों (गोविंद स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास एवं नंददास) को परंपरा से जोड़ा, जिससे ये 'अष्ट–सखा' कहलाए।
- यह अष्ट–सखा संगीत के असाधारण कौशल के धनी थे।
- गुसाईं ने राग, भोग एवं श्रृंगार को सेवा के अभिन्न अंग के रूप में पेश किया।
- राग सेवा में 8 प्रहर के अनुसार विभिन्न रागों एवं ताल में पद गाना शामिल है, जो अष्टयाम (मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्या, आरती एवं शयन) सेवा का हिस्सा है।

➢ प्रसार :

- वल्लभाचार्य के शिष्य UP, राजस्थान, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में प्रसारित होते गए, जिससे यह संगीत पारंपरिक संगीत का हिस्सा बन गया।
- बाद में कई राजा भी वल्लभाचार्य के शिष्य एवं अनुयायी बने, जिससे यह दरबारी संगीत बन गया।
- वर्तमान समय में श्रीनाथ जी का मंदिर श्रीनाथ जी की हवेली के रूप में जाना जाता है, (पुष्टिमार्ग मंदिरों को हवेली के रूप में संदर्भित किया जाता है) जिसके कारण इस संगीत का नामकरण 'हवेली संगीत' के रूप में हो गया।

➢ परंपरा एवं भक्ति मिश्रण :

- भागवत पुराण में भक्ति सेवाओं के 9 रूप बताए गए हैं :–

1. श्रवण
2. जप (कीर्तनम)
3. स्मरण
4. सेवा
5. प्रार्थना
6. अर्चनम (देवता की पूजा)
7. दास्यम (आज्ञा–पालन)
8. सख्यम (मित्र के रूप में सेवा)
9. आत्म–निवेदनम (भगवान के लिए सब कुछ त्यागना)

- इन सभी में कीर्तन का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है, जिसने पुष्टिमार्गीय कीर्तन भक्ति को प्रसिद्ध बनाया एवं लोकप्रिय बनाया।

➢ विशिष्टता :

Result Mitra

- हवेली संगीत के बारे में एक गलत धारणा है कि हवेली संगीत केवल ध्रुपद शैली में गया जाता है, जबकि सत्य यह है कि यह ख्याल, कीर्तन एवं भजन शैलियों में भी गाया जाता है।

➢ ख्याल गायकी :

- इसमें राग पर जोर दिया जाता है।

➢ ध्रुपद गायकी :

- इसमें लय/ताल एवं शब्द प्रधान होता है।

Note :– अकबर के दरबारी संगीतकार तानसेन ध्रुपद गायकी के प्रमुख कलाकार थे।

➢ भारतीय शास्त्रीय संगीत :

- भारत में शास्त्रीय संगीत की दो परंपराएं (i) कर्नाटक एवं (ii) हिंदुस्तानी प्रचलित हुई, जिसके अलावा लोक एवं आदिवासी जैसी कई अन्य परंपराएं भी हैं।
- कर्नाटक संगीत मुख्यत: कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में लोकप्रिय है, वहीं हिंदुस्तानी संगीत उत्तर भारत में लोकप्रिय है।
- कर्नाटक संगीत अपनी एकरूपता के लिए प्रसिद्ध है, जबकि हिंदुस्तानी संगीत ज्यादा विविधता वाला है।
- कर्नाटक एवं आंध्रप्रदेश दो ऐसे राज्य हैं, जहां हिंदुस्तानी संगीत भी अभ्यास किया जाता है।

Result Mitra